ISSN 0974 1666

सी.सी.आर.यू.एम

न्यूज़लेटर

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद की द्वैमासिक पत्रिका

खंड 36 • अंक 3–6 मई–दिसम्बर 2016

आयुष पद्धतियों के प्रोत्साहन हेतु भारत एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 13 मई को जनैवा में आयुष पद्धतियों की गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रभावकारिता को प्रोत्साहित करने के लिए एक ऐतिहासिक परियोजना सहयोग अनुबंध (पी.सी.ए.) पर हस्ताक्षर किए।

इस अनुबंध (पी.सी.ए.) पर श्री अजीत एम. शरण, सचिव, आयुष मंत्रालय और डॉ. मैरी कीनी, सहायक महानिदेशक, हेल्थ सिस्टमस एण्ड इन्नोवेशन्स, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने हस्ताक्षर किए। श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय और डॉ. मारग्रेट चेन, महानिदेशक, विश्व स्वास्थ्य संगठन, संगठन मुख्यालय में इस एतिहासिक समझौते के साक्षी थे।

इस पी.सी.ए. को 'डब्ल्यू.एच.ओ. और आयुष, भारत के मध्य परम्परागत और अनुपूरक औषधियों में सेवा प्रबंध की गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रभावकारिता प्रोत्साहन पर सहयोग 2016–2020' का नाम दिया गया। इसका उद्देश्य 'डब्ल्यू. एच.ओ. परम्परागत एवं अनुपूरक औषधि नीति : 2014–2023' के विकास एवं क्रियान्वयन हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन को सहयोग करना है जिससे परम्परागत भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के वैश्विक प्रोत्साहन में मदद मिलेगी।

वर्ष 2016–2020 के लिए हुआ यह पी.सी.ए. योग प्रशिक्षण के लिए प्रथम डब्ल्यू.एच.ओ. निर्देश चिन्ह दस्तावेज़ और आयुर्वेद, यूनानी एवं पंचकर्म चिकित्सा के लिए प्रथम डब्ल्यू.एच.ओ. निर्देश चिन्ह दस्तावेज़ तैयार करेगा। यह परम्परागत औषधियों की गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रभावकारिता सुनिश्चित करने और राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली में सामंजस्य को प्रोत्साहित करने की राष्ट्रीय नीति को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देगा।

इस अवसर पर भारत द्वारा आयोजित आतिथ्य सत्कार में बोलते हुए माननीय आयुष मंत्री ने भारतीय परम्परागत चिकित्सा के इतिहास, सम्पन्न धरोहर और साकल्यवादी व व्यापक स्वास्थ्य सुरक्षा उपलब्धता क्षेत्र मे बढ़ती प्रासंगिकता के बारे में बताया। उन्होनें भारत वर्ष और विदेश में परम्परागत चिकित्सा के प्रोत्साहन में भारत सरकार की रूचि और प्राथमिकता को दोहराया और भारत के राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम में आयुष के क्रियात्मक समाकलन व वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा को प्राप्त करने हेतु उठाए गए कदमों को उजागर किया।

मंत्री महोदय ने भारत द्वारा देश में डब्ल्यू.एच.ओ. चिकित्सा नीति 2014–2023 के संबंध में उठाए गए कदमों व गतिविधियों के बारे में बताया। उन्होनें कहा कि भारत ने वास्तव में एक अनेकवादी स्वास्थ्य रक्षा प्रणाली को अपनाकर एक अनूठा उदाहरण पेश किया है जो प्रत्येक मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धति के विकास और साकल्यवादी स्वास्थ्य रक्षा सेवाओं की उपलब्धता को सुनिश्चित करता है।

• *नियाज़*

न्यूट्रास्युटिकल्स, हर्बल्स और कार्यात्मक आहार पर संगोष्ठी

भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल ने 5 जुलाई 2016 को नई दिल्ली में सम्पूर्ण स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से न्यूट्रास्युटिकल्स, हर्बल्स और कार्यात्मक आहार पर अपने द्वितीय राष्ट्रीय संगोष्ठी–सह–पुरस्कार का आयोजन किया।

भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल द्वारा 5 जुलाई 2016 को नई दिल्ली में न्यूट्रास्युटिकल्स, हर्बल्स और कार्यात्मक आहार पर आयोजित द्वितीय राष्ट्रीय संगोष्ठी–सह–पुरस्कार के दौरान पुरस्कार वितरण का एक दृश्य।

संगोष्ठी का उद्घाटन माननीय श्री वाई. एस. चौधरी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान के केन्द्रीय राज्य मंत्री ने किया। अपने उद्घाटन सम्बोधन के दौरान, उन्होंने कहा कि न्यूट्रास्युटिकल उत्पाद लोकप्रिय हो रहे हैं और उपभोक्ताओं के सामान्य आहार का हिस्सा बन रहें हैं।

अपने स्वागत भाषण में डॉ. बी. के. राव, अध्यक्ष, भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल ने कहा कि न्यूट्रास्यूटिकल ऐसा उत्पाद है जो रोगों से बचने एवं उपचार संबंधी लाभ सहित स्वास्थ्य एवं चिकित्सीय लाभ देता है। उन्होंने आगे बताया कि न्यूट्रास्यूटिकल्स को कार्यात्मक आहारों, पेय पदार्थों और आहार पूरक तत्वों में श्रेणीबद्ध किया गया है।

उद्घाटन समारोह के दौरान, कई गणमान्य व्यक्ति जैसे डॉ.एच.के.चोपड़ा, सह–अध्यक्ष, भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल और राष्ट्रीय स्वास्थ्य देखभाल और अस्पताल परिषद् के मुख्य हृदय रोग विशेषज्ञ, डॉ. उमंग चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष, भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल और श्री कुमार अनिल, सलाहकार, भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण उपस्थित थे और सत्र को सम्बोधित किया। इस अवसर पर, न्यूट्रास्यूटिकल्स, हर्बल्स और कार्यात्मक आहार के क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न उद्योगों के प्रबंध निदेशकों को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री द्वारा सम्मानित किया गया। संगोष्ठी में न्यूट्रास्युटिकल्स और कार्यात्मक आहार: वैश्विक मानकों के साथ भारतीय नियामक और गुणवत्ता मापदण्डों को संरेखित करना, भारतीय न्यूट्रास्युटिकल बाज़ार में अवसर और चुनौतियां और न्यूट्रास्युटिकल्स के क्षेत्र में उभरती प्रवृतियां पर तीन सत्र थे। प्रत्येक सत्र में चार आमंत्रित प्रख्यात वक्ताओं द्वारा व्याख्यान दिए गए और इसके अतिरिक्त कई अन्य व्याख्यान भी दिए गए।

इस अवसर पर केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) और आयुष मंत्रालय, भारत सरकार की अन्य संस्थाओं द्वारा उनकी शोध गतिविधियों और उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए प्रदर्शिनी लगायी गयी। इस कार्यक्रम में के.यू.चि.अ.प. का प्रतिनिधित्व डॉ. रामप्रताप मीना, अनुसंधान अधिकारी, औषधि मानकीकरण अनुसंधान संस्थान, गाज़ियाबाद ने किया।

एन.पी.सी.डी.सी.एस. में यूनानी चिकित्सा के समाकलन के लिए परियोजना का शुभारम्भ

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन कार्यरत केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) ने 01 जून को लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश में कैंसर, मधुमेह, हृदय संबंधी रोगों और स्ट्रोक की रोकथाम और नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम (एन.पी.सी.डी.सी.एस.) में यूनानी चिकित्सा के समाकलन हेतु नियामक परियोजना का शुभारम्भ किया।

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय, डॉ. शिव प्रताप यादव, राज्य मंत्री, (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य), उ.प्र., श्री अजय मिश्रा 'टेनी', सांसद 01 जून 2016 को लखीमपुर खीरी, उ.प्र. में कैंसर, मधुमेह, हृदय संबंधी रोगों और स्ट्रोक की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एन.पी.सी.डी.सी.एस.) में यूनानी चिकित्सा के समाकलन परियोजना का उद्घाटन करते हुए।

परियोजना का शुभारम्भ करते हुए, श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा कि यूनानी चिकित्सा पद्धति एक समग्र पद्धति है जो स्वास्थ्य एवं रोग के सभी निर्धारक तत्वों को संबोधित करती है। गैर संक्रामक रोगों की रोकथाम और उपचार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता रखती है एवं लोगों में स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देती है। परियोजना के उद्देश्यों पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि इस परियोजना का उद्देश्य जनपद में स्वास्थ्य संरक्षण एवं वृद्धि और जीवन शैली से संबंधित रोगों की रोकथाम एवं उपचार में एन.पी.सी.डी.सी.एस. के साथ जुड़ना है।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. शिव प्रताप यादव, राज्य मंत्री, (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य), उ.प्र. ने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के आकलन के अनुसार 2012 में 59 लाख (कुल मृत्यु दर का 60 प्रतिशत) मृत्यु के लिए गैर संक्रामक रोग जिम्मेदार थे। इसलिए इन गैर संक्रामक रोगों का सामना करने के लिए यूनानी चिकित्सा और अन्य भारतीय चिकित्सा पद्धतियों की सामर्थ्य के उपयोग किए जाने की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, (डी.जी.एच.एस), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2010 में प्रारम्भ किये गए कैंसर, मधुमेह, हृदय संबंधी रोगों और स्ट्रोक की रोकथाम और नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम में यूनानी चिकित्सा के समाकलन की परियोजना इस उद्देश्य से प्रारंभ की गई है कि कार्यक्रम के कार्यान्वयन में आयुष मंत्रालय के माध्यम से भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के अनुठे एवं समय–परीक्षित उपचारों का लाभ उठाया जा सके। के.यू.चि.अ.प. अपने केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा लखीमपुर खीरी के अर्न्तगत 17 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र (सी.एच.सी.), 54 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (पी.एच.सी.), जिला अस्पताल और जिला मुख्यालय के एन.पी.सी.डी.सी.एस. कक्ष के माध्यम से इस कार्यक्रम में अपनी सेवाएं और संसाधन प्रदान करेगा।

इस अवसर पर "इन्टीग्रेशन ऑफ यूनानी मेडिसिन इन एन.पी.सी.डी.सी.एस." पर एक प्रशिक्षण नियमावली का भी विमोचन किया गया। लखीमपुर खीरी, उ.प्र. के 17 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों (सी.एच.सी.) पर जीवन शैली नैदानिक केन्द्रों को खोले जाने हेतु चिह्नित करने के लिए कार्यक्रम स्थल पर स्थापित एक जीवन शैली नैदानिक केन्द्र का भी श्री श्रीपाद येस्सो नाईक द्वारा उद्घाटन किया गया।

इस समारोह में श्री अजय मिश्रा 'टेनी' सांसद, खीरी और श्री उत्कर्श वर्मा मधुर, विधायक, लखीमपुर, डॉ.एल.स्वास्तीचरण, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, भारत सरकार, प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. तथा भारत सरकार और उ.प्र. सरकार के अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

ई-ग्रन्थालय पर कार्यशाला में भागीदारी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के पुस्तकालय कर्मचारियों ने 15–17 सितम्बर को नई दिल्ली में राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (एन.आई.सी.) के इन्टीग्रेटेड लाइब्रेरी मैनेजमेंन्ट सॉफ्टवेयर ई–ग्रन्थालय पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया। इस कार्यशाला का आयोजन नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी संस्थान (एन.एस.आई.टी.) ने एन.आई.सी. के सहयोग से सॉफ्टवेयर ई–ग्रन्थालय 4.00 के पटल आधारित संस्करण का प्रशिक्षण देने के लिए किया।

नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा 15–17 सितम्बर को नई दिल्ली में ई–ग्रन्थालय पर आयोजित कार्यशाला के प्रतिभागियों का समूह चित्र।

कार्यशाला का उद्घाटन प्रो. योगेश सिंह, निदेशक, एन.एस.आई.टी. ने डॉ. एस. ठाकुर, प्रमुख, पुस्तकालय सेवाएं, एन.एस.आई.टी, श्री प्रभात कुमार चौधरी, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष, एन.एस.आई.टी, डॉ. आर. के. मटोरिया, तकनीकी निदेशक, एन.आई.सी. और श्री जी. एल. मीना, रजिस्ट्रार, एन.एस.आई.टी. की उपस्थिति में किया।

कार्यशाला में सॉफ्टवेयर के परिचय और प्रशासनिक, अभिग्रहण, सूचिपत्र, प्रसार, धारावाहिक और लेख मॉड्यूल्स पर सैद्धांतिक और व्यवहारिक सत्र हुए। सत्रों का संचालन डॉ. मटोरिया और सुश्री रजनी मिश्रा, वैज्ञानिक–डी, एन.आई.सी. द्वारा किया गया।

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् मुख्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र से पुस्तकालय एवं सूचना सहायक, श्री सैय्यद शुऐब अहमद और श्री मसूद–उज़–ज़फर खां और श्रीमती लीलावती, वरिष्ठ पुस्तकालय परिचारक ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

• *सैय्यद शुऐब अहमद*

एम.टी.एन.एल. परफेक्ट हैल्थ मेला 2016 में भागीदारी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) ने 25 से 29 अक्टूबर को नई दिल्ली में हैल्थ केयर फाउन्डेशन ऑफ इन्डिया एवं नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् द्वारा आयोजित एक व्यापक स्वास्थ्य मेले "एम.टी.एन.एल. परफेक्ट हैल्थ मेला 2016" में भाग लिया। मेले का उद्देश्य एक ही जगह सभी चिकित्सा पद्धतियों को शामिल कर स्वास्थ्य से संबंधित पहलुओं पर जागरूकता पैदा करना था।

1993 में अपने प्रारम्भ से ही यह विशाल सामुदायिक सेवा कार्यक्रम जोकि पारंपरिक एवं आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल के मिश्रण को प्रस्तुत करता है, एक समय–परीक्षित जन स्वास्थ्य जागरूकता मॉड्यूल रहा है जो हर साल 3 से 5 लाख आगंतुकों को आकर्षित करता है।

कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय श्री सतेन्द्र जैन, स्वास्थ्य मंत्री, दिल्ली सरकार द्वारा किया गया।

के.यू.चि.अ.प. ने आयुष मंत्रालय की अन्य अनुसंधान परिषदों के साथ इस मेले में भाग लिया और इस अवसर पर अपनी संबंधित चिकित्सा पद्धतियों की क्षमताओं का प्रचार कर आगंतुकों को सुरक्षित पारंपरिक उपचार प्रदान किया। परिषद् ने मेले में अपने प्रकाशन का प्रदर्शन करने के लिए बुक स्टॉल भी लगाया और रोगों की रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन पर निःशुल्क साहित्य का वितरण किया। इस कार्यक्रम में डॉ. वसीम अहमद, डॉ. साद अहमद, श्री अज़ीम खां और श्री इशरत अली द्वारा परिषद् की भागीदारी को व्यवस्थित किया गया।

परिषद् की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

जारी अनुसंधान गतिविधियों, नवीन प्रस्तावों और नियमित गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए 28 मई 2016 को नई दिल्ली में केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक हुई।

चल रही अनुसंधानिक गतिविधियों, नए प्रस्तावों एवं सामान्य गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए 28 मई को नई दिल्ली में परिषद की वैज्ञानिक सलाहाकार समिति की उन्चासवीं बैठक का एक दृश्य।

बैठक का आरंभ प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने स्वागत सम्बोधन से किया जिसमें उन्होंने हाल ही में गठित वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्यों को परिषद् के उद्देश्यों और उपलब्धियों के बारे में एक संक्षिप्त परिचय दिया। डॉ. खालिद.एम.सिद्दीकी, उप–महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने परिषद् के इतिहास को प्रस्तुत किया और कार्यसूची के बारे में अवगत कराया।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति ने वर्ष 2016–17 के वार्षिक कार्य योजना पर विचार कर प्रस्तावित परियोजनाओं की संस्तुति दी। समिति ने विभिन्न यूनानी भेषजकोषीय औषधियों के नैदानिक वैधीकरण के लिए 20 संलेखों पर विचार किया तथा इनको इस सलाह के साथ संस्तुति दी कि नफ़ख–ए–शिकम में जवारिश मस्तगी के वैधीकरण को छोड़ दिया जाए और कुरूह–इस्ना अशरी के बजाय इस्हाल में हब्बे–राल का वैधीकरण किया जाए।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति ने परिषद् के विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों से प्राप्त अंतरंग (इन्ट्राम्यूरल) अनुसंधान परियोजनाओं पर विचार किया और इसकी संक्षिप्त सूचि बनाकर इनके मूल्यांकन हेतु विशेषज्ञों की समिति के समक्ष प्रस्तुत करने का सुझाव दिया। समिति ने फ़ारसी पुस्तक इक्सीर–ए–आज़म का उर्दू में अनुवाद करने के प्रस्ताव पर विचार कर उसे संस्तुती प्रदान की। समिति की अन्य संस्तुतियों में केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (के.यू.चि.अ.सं.), लखनऊ एवं क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), चेन्नई में फार्मेसी की स्थापना करना, के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद में फार्मेसी का उन्नयन, क्षे.यू.चि.अ.सं., अलीगढ़ में भेषजकोषीय और फार्माकोग्नॉसी प्रयोगशालाओं का उन्नयन और कुछ स्वीकृत पदों का एक विषय से दूसरे में रूपांतरण सम्मिलित थे।

इस बैठक की अध्यक्षता वैज्ञानिक सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ. एम. ए. वहीद द्वारा की गई जिसमें डॉ. यासमीन शम्सी, प्रो. इमामुद्दीन, प्रो. मुश्ताक अहमद, प्रो. एस. शाकिर जमील, प्रो. अलाउद्दीन अहमद, डॉ. रूचिका कॉल गानेकर और प्रो. सुभाष पाध्य उपस्थित रहे जबकि प्रो. अनुराग श्रीवास्तव बैठक में उपस्थित नहीं हो सके। बैठक के दौरान परिषद् मुख्यालय के अनुसंधान अधिकारी और संबंधित प्रशासनिक कर्मचारी भी उपस्थित थे।

• *नियाज़*

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

कार्यालय के दिन–प्रतिदिन कार्यों में राजभाषा के प्रयोग और राजभाषा प्रोत्साहन नीति को कार्यान्वित करने के उद्देश्य से केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.), द्वारा परिषद् मुख्यालय, नई दिल्ली और परिषद् के विभिन्न संस्थानों में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। परिषद् मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा 8–22 सितम्बर तक मनाया गया जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के अतिरिक्त मुख्यालय के विभिन्न अनुभागों में किए गए हिन्दी कार्यों की समीक्षा की गई।

8 सितम्बर को पखवाड़ा कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए के.यू.चि.अ.प., नई दिल्ली के महानिदेशक, प्रो. रईस–उर–रहमान ने कहा कि राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए परिषद में कार्यरत सभी कर्मचारियों का कर्त्तव्य है कि वह राजभाषा की नीति अनुसार अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करें और पखवाड़ा कार्यक्रम में आयोजित की जाने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्ण भाग लें।

हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान परिषद् मुख्यालय में हिन्दी श्रुतलेख, हिन्दी अनुवाद, हिन्दी टिप्पणी लेखन, वाद–विवाद, हिन्दी काव्य पाठ एवं निबंध–लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और विजेताओं को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सरकारी काम काज में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए, परिषद् के अधीन संस्थानों/केन्द्रों/एककों जैसे केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद व लखनऊ, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, अलीगढ़, भद्रक, मुम्बई, पटना, चेन्नई, कोलकाता और श्रीनगर; हकीम अजमल खां ऐतिहासिक एवं साहित्यिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, नैदानिक अनुसंधान एकक, मेरठ, बुरहानपुर, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, इलाहाबाद, औषधि मानकीकरण अनुसंधान संस्थान, गाज़ियाबाद आदि में भी हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया।

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के अधिकारी हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेते हुए।

30 सितम्बर को परिषद मुख्यालय में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। डॉ. ईश्वर एन. आचार्य, निदेशक, केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् समारोह के मुख्य अतिथि थे। अपने सम्बोधन में उन्होंने हिन्दी भाषा की प्रगति व प्रोत्साहन के लिए प्रत्येक स्तर पर गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. मोहम्मद सलीम सिद्दीकी, अनुसंधान अधिकारी एवं राजभाषा प्रभारी इस कार्यक्रम के मुख्य संयोजक थे और श्रीमति अख़्तर परवीन, हिन्दी सहायिका, श्रीमति प्रेरणा कथूरिया, हिन्दी अनुवादक ने इस कार्यक्रम में सहयोग दिया।

डी-स्पेस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भागीदारी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) ने 1–5 अगस्त 2016 को सी.एस.आई.आर.–राष्ट्रीय विज्ञान संचार तथा सूचना स्रोत संस्थान (सी.एस.आई.आर–निस्केयर), नई दिल्ली में डी–स्पेस सॉफ्टवेयर के माध्यम से संस्थागत कोष की रूपरेखा एवं विकास पर हुए पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन निस्केयर के निदेशक ने किया। पाँच दिवसीय कार्यक्रम में निस्केयर के संकायों ने लिनक्स–डी स्पेस के सिद्धांत और प्रायोगिक अभ्यास हेतु विभिन्न सत्र रखे। इस कार्यक्रम में के.यू.चि.अ.प. के पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र से श्री सैय्यद शुऐब अहमद, पुस्तकालय एवं सूचना सहायक और विभिन्न शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों से 25 से अधिक प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया।

• *सैय्यद शुऐब अहमद*

नमक्कल वन खंड में प्रजातीय वनस्पतिक सर्वेक्षण

क्षेत्रीय यूनानी अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), चेन्नई में कार्यरत परिषद के शोधकर्त्ताओं ने तमिलनाडू में नमक्कल जनपद के नमक्कल वन खंड में प्रजातीय वनस्पतिक सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण का उद्देश्य यहां पर पाई जाने वाली वनस्पतियों का सामान्य प्रारूप तथा सामान्य औषधीय पौधों की उपलब्धता, विशेष रूप से यूनानी चिकित्सा में प्रयोग होने वाले पौधों के बारे में जानकारी उजागर करना था। साथ ही पौधों के औषधीय गुणों के बारे में लोकदावे एकत्र करना भी इस सर्वेक्षण के उद्देश्यों में शामिल था।

के.यू.चि.अ.प. के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, चेन्नई के शोधकर्ता स्थानीय लोगों से औषधीय पौधों के प्रति लोक दावे एकत्र करने हेतु वार्तालाभ करते हुए।

मैलोटस फिलिपाईनोन्सिस (लाम.) म्यूल. आर्ग. (कमीला),

नमक्कल जनपद 11°–00′ व 11°–360′ उत्तरी अक्षांतर तथा 77°–280′ व 78°–300′ पूर्व देशांतर पर स्थित है। नमक्कल वन खंड में चार वन श्रृंखलाएं हैं जिनके नाम हैं, नमक्कल, रासीपुरम, कोल्लीमलाई तथा मुल्लूकुरिची। कोल्लीमलाई एक छोटी पहाड़ी श्रृंखला है। यह नमक्कल जिले के दक्षिण–पूर्व भाग में स्थित है। यह दक्षिण भारत के पूर्वी घाट का हिस्सा है। इसमें अत्यंत संकरी ढलान वाली पहाड़ियां तथा गहरी घाटियां हैं। सामान्य वार्षिक वर्षा लगभग 1200 मिमी तथा तापमान 10° से. से 30° से. तक रहता है। कोल्लीमलाई की वनस्पतियां मुख्य रूप से पतनशील हैं तथा रेतीले वन एवं झाड़ीदार जंगल पाये जाते हैं। दूसरी वन श्रृंखलायें अधिकतर पतनशील तथा झाड़ीदार वनस्पतियों से घिरी हुई हैं। कोल्लीमलाई क्षेत्र में मुख्यतः मलयाली जनजाति समुदाय वास करता है।

इस जनपद का मुख्य व्यवसाय कृषि है। खेतीबारी सामान्यतः मानसून की वर्षा, कुओं तथा नदियों के पानी पर निर्भर करती है। खेती का लगभग 90 प्रतिशत क्षेत्र खाद्य फसलों के अंतर्गत आता है। जिले की मुख्य अनाज की फसलें धान तथा बाजरे की भिन्न क़िस्में हैं। दालों में अधिकतर खेती अरहर, काला चना, मूंग और चना की होती है। तिलहनों में, मूंगफली, अरंड तथा तिल का कृषि में मुख्य स्थान है। अन्य महत्वपूर्ण वाणिज्यिक खेती के अन्तर्गत गन्ना, कपास तथा कसावा है जोकि जिले के कोल्लीमलाई ताल्लुक के बहुत से क्षेत्रों में की जाती है। नमक्कल जिले में मुर्गी पालन का अभूतपूर्व विकास किया गया है। इसके अतिरिक्त यह जनपद डेरी उद्योग के लिये भी जाना जाता है।

स्ट्राइक्नॉस नुक्स–वोमिका एल. (अजराकी)

क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान, सर्वेक्षण टीम ने 121 पौधों की प्रजातियों के 365 नमूने एकत्र किये। इनमें बहुत से पौधे यूनानी चिकित्सा पद्धति में प्रयोग किये जाते हैं। इनमें से कुछ हैं– *एब्रस प्रिकेटोरियस* एल. (गुंगची), *अधाटोडा जीलेनिका* मेडिक. (अडूसा), *ईगल मारमेलॉस* (एल.) कौर. (बेलगिरि), *ऐरूवा लेनाटा* (एल.) जस. एक्स शुल्ट. (बिसेरी बूटी), *एलपिनीया गालंगा* एस. डब्ल्यू. (खूलंजान), *एल्सटोनिया स्कोलैरिस* (एल.) आर.बी.आर. (काशिम), *एन्ड्रोग्राफिस पैनिकुलाटा* (बर्म.एफ.) वालः एक्स नीस. (कालमेघ), *एनोजीसस लेटिफोलिया* (डीसी.) वाल. (धावा), *बोईरहाविया डिफ्यूज़ा* एल. (हंडाकाकू), *ब्रेसिका नाईग्रा* (एल.) कोच. (राई), *सीसलपीनिया क्रिस्टा* एल. (करंजवा), *कार्डियोस्पर्मम केनेसेन्स* वाल. (क़िलक़िल), *केसिया फ़िस्चुला* एल. (अमलतास), *केसिया ऑरिकुलाटा* एल. (तरवर), *चीनोपोडियम एलबम* एल. (बथुआ), *क्लेरोडेन्ड्रम सिर्रेटम* (एल.) मून (भारंगी), *क्लाईटोरिया टरनेटिया* एल. (माज़रियून), *कोरिएन्ड्रम सेटाईवम* एल. (किशनीज़), *दतूरा मेटल* एल. (दतूरा), *डोडोनिया विसकोज़ा* (एल.) जैक. (जंगली अनार), *गौसिपियम आरबोरियम* एल. (पंबादाना), *जिमनेमा सिलवेस्टर* (रीट्ज़) आर.बी.आर. (गुड़मार बूटी), *हेमीडेस्मस इन्डिकस* (एल.) आर. बी.आर. (उशबा–ए–हिन्दी), *हिबिसकस रोज़ासाईनेन्सिस* एल. (गुड़हल), *आईपोमिया नील* (एल.) रोथ. (हब्बुल नील), *ल्यूकस एसपेरा* स्प्रेंग. (तुम्बा), *मैलोटस फिलिपाईनोन्सिस* (लाम.) म्यूल. आर्ग. (कमीला), *मैन्था आरवेन्सिस* एल. (नाना), *माईरेबिलिस जलापा* एल. (गुले अब्बास), *मोरिंगा ओलिफेरा* लाम. (सहाजना), *मोरस एलबा* एल. (तूत सफ़ेद), *मुकुना पुरूरीन्स* (एल.) डीसी. (कौंच) *माईरिस्टिका फ्रेग्रेंस* हाउट (बिसबासा), *नीरियम इनिकुम* मिल. (कनेर), *ऑसिमम अमेरिकानम,* एल. (बादरूज), *ऑसिमम बेसिलिकम* एल. (जंगली तुलसी), *फाईलेन्थस एम्बलिका* एल. (आमला) आदि।

सर्वेक्षणकर्त्ताओं ने इस इलाके के जनजातीय तथा अन्य क्षेत्रवासियों से पौधों के औषधीय उपयोगों पर आधारित 36 लोक दावे एकत्र किये। इनमें से कुछ पौधों के महत्वपूर्ण लोक दावे इस प्रकार हैं। *एब्रस प्रिकेटोरियस* एल. (कुन्दुमनी) खांसी तथा सर्दी के लिये, *ईगल मारमेलॉस* (एल.) कौर. (बेलगिरि) का फल सांस के रोग में, *एरूवा लनाटा* (एल.) ए. जस. एक्स शुल्ट (पूलाई पू) का सम्पूर्ण पौधा गुर्दे की पथरी के लिये, *एलपिनिया गालंगा* एस डब्ल्यू. (सिथाराथाई) के पत्ते पेट दर्द के लिये, *एल्स्टोनिया स्कोलेरिस* (एल.) आर.बी.आर, (ईज़ीलाईपलाई) की छाल बुखार के लिये, *एन्ड्रोग्राफ़िस पैनिकुलाटा*

मोरस एलबा एल. (तूत सफ़ेद),

(बर्म.एफ.) वाल. एक्स नीस. (नीलावेम्बू) की पत्तियां मलेरिया बुखार के लिये, *ब्रैसिका नाईग्रा* (एल.) कोच. (कडूगू) की पत्तियां फोड़े के लिये, *केजेनस कजान* (एल.) मिलसप. (थूवाराई) की पत्तियां पीलिया रोग के लिये, *केलोट्रोपिस गिगोन्शिया* (एल.) आर.बी.आर. (इरक्कू) ज़हरीले जन्तु के काटे हुए विष के लिये, *कार्डियोस्पर्मम हेलीकेकेबम* एल. (मुदाकादन) की पत्ती जोड़ो के दर्द के लिये, *केसिया ऑरिकुलाटा* एल. (अवारम) के फूल डाईबेटीज़ तथा टूटी हड्डी के लिये, *केसिया फ़िस्चुला* एल. (कोन्ड्राई) के फूल गले की ख़राश के लिये, *केथारेंथस रोज़ियस* (एल.) जी. डॉन. (निथियाकल्यानी) के पत्ते गैस की परेशानी के लिये, *किलिओम विस्कोज़ा* एल. (नाईवेल्लाई) की पत्तियां जोड़ों के दर्द के लिये, *क्लाईटोरिया टरनेटिया* एल. (संगूपू) के बीज पेट के अल्सर एवं जड़ बुखार के लिये, *डायोसकोरिया बल्बीफेरा* एल. (कट्टूवल्ली) का कंद सूजन और दर्द के लिये, *डोडोनिया, विस्कोजा* (एल.) जैक (विराली) की पत्तियां सर दर्द के लिये, *जिम्नेमा सिलवेस्टर* (रीट्ज़.) आर. बी.आर. एक्स शुल्ट. (सीरूकुरिन्जी) के पत्ते डाईबिटीज़ के लिये, *हेमीडैस्मस इन्डिकस* (एल.) आर.बी.आर. (नन्नारी) की मूल डाईरिआ के लिये, *हिबिस्कस रोज़ासाईनेन्सिस* एल. (सेम्पारूथी) के फूल बाल बढ़ाने के लिये, *जेट्रोफा करकस* एल. (कट्टूकोट्टाई / कट्टूमनाकू) का क्षीर मुंह के छालों के लिये, *लैन्टाना कमोरा* एल. (ऊनीछेड़ी) की पत्तियां घाव भरने के लिये, *ल्यूकस एस्पेरा* (विन्ड.) लिंक (तुम्बाई) की पत्तियां सर्दी के लिये, *मैलोटस फिलिपपेन्सिस* (लाम.) म्यूल. आर्ग. (सेन्थूरम) के बीज खारिश के लिये, *मैन्था आरवेन्सिस* एल. (पुदीना) के पत्ते अपाचन के लिये, *माईरेबिलिस जलापा* एल. (एन्थिमल्ली) के पत्ते घाव भरने के लिये तथा *मुकुना प्रुरेन्स* (एल.) डीसी. (पूनाइक्कली) के बीज यौन सम्बन्धित रोगों के लिये उपयोग किये जाते हैं।

श्री आर. मुरूगेस्वरन, अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति) के नेतृत्व में सर्वेक्षण टीम में हकीम नौमान अनवर, अनुसंधान अधिकरी (यूनानी), डॉ. के. वेन्कटेसन, अनुसंधान सहायक (वनस्पति), श्री मज़हर अली, फील्ड अटैन्डेट तथा श्री मोहम्मद हुसैन, ड्राईवर, क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई शामिल थे।

• *रिपोर्टः अमीनुद्दीन*
इनपुटः श्री आर. मुरूगेस्वरन

ब्रिक्स व्यापार मेला-2016

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने 12–14 अक्टूबर 2016 को प्रगति मैदान, नई दिल्ली में वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय और विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित ब्रिक्स व्यापार मेले में भाग लिया। ब्रिक्स निर्माण–सहयोग हेतु नई खोज के विषय पर आधारित इस मेले में ब्रिक्स देशों की विकास चुनौतियों का सामना करने हेतु वहां उपलब्ध बेहतरीन प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित किया गया।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय और विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 12–14 अक्टूबर 2016 को प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित ब्रिक्स व्यापार मेले में के.यू.चि.अ.प. के स्टॉल में आए आगंतुकों का एक दृश्य।

मेले का उद्घाटन माननीय उप–राष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी द्वारा विभिन्न प्रतिभागी देशों से आए मंत्रियों की उपस्थिति में किया गया। मेले का उद्देश्य ब्रिक्स के हितकारी कई अन्य क्षेत्रों को उजागर करना और युवा उद्यमियों को एक साथ लाना था।

के.यू.चि.अ.प. और आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के अन्य अनुसंधान परिषदों और संस्थानों ने मेले में भाग लिया तथा अनुसंधानिक और शैक्षणिक गतिविधियों में अपनी उपलब्धियों को प्रदर्शित किया। के.यू.चि.अ.प. के स्टॉल ने लगभग 1000 आगंतुकों को आकर्षित किया और स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों और यूनानी चिकित्सा में अनुसंधान के क्षेत्र में परिषद् की उपलब्धियों और स्वस्थ जीवन शैली के सिद्धांत पर निःशुल्क साहित्य प्रदान किया। डॉ. साद अहमद, परामर्शदाता (आरोग्य), डॉ. साजिद, तकनीकी अधिकारी (यूनानी) और श्री अज़ीम ख़ान, संदेशवाहक ने मेले में के.यू.चि.अ.प. का प्रतिनिधित्व किया।

लासा सम्मेलन-2016 में भागीदारी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने 14 से 15 अक्टूबर 2016 को बेंगलुरू में बायोकॉन ब्रिस्टल–मायर्स स्किविब रिसर्च एण्ड डेवलैपमेंट सेन्टर (बी.बी.आर.सी.) के सहयोग से लेबोरेटरी एनीमल साइंटिस्ट्स एसोसिएशन (लासा) द्वारा मानव रोगों के मॉडलिंग के लिए पशु विज्ञान प्रयोगशाला के विकास पर आयोजित अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

लेबोरेटरी एनीमल साइंटिसट्स एसोसिएशन (लासा) द्वारा 14 से 15 अक्टूबर 2016 को बेंगलेरू में मानव रोगों के मॉडलिंग के लिए पशु विज्ञान प्रयोगशाला के विकास पर आयोजित अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में गणमान्य व्यक्ति औपचारिक दीपक रौशन करते हुए।

इस सम्मेलन का उद्देश्य पशु अनुसंधान के परिणामों पर असर डालने वाले मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना तथा पशु अनुसंधान से संबंधित शोध को अंतरण करना एवं चल रहे अनुसंधान में अपरिहार्यता पैदा करना था।

यह सम्मेलन विज्ञान और स्वास्थ्य सेवाओं में पशु अध्ययन के अतीत, वर्तमान और भविष्य की भूमिका और उन्नति को अभिग्रहण करने के लिए प्रयास करने पर केन्द्रित था। साथ ही इसका उद्देश्य पशु विज्ञान प्रयोगशाला में विज्ञान एवं पशुहित हेतु मौजूदा प्रवृत्ति पर सीधे विचार विमर्श को उत्तेजित करना तथा अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे न्यूरोफार्माकोलॉजी, गुर्दा संबंधी रोग, कैन्सर के शोध के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग होने वाले नवीन पशु मॉडल पर चर्चा करना था। इस सम्मेलन ने पशु अध्ययन में व्यस्त औद्योगिक व्यक्तियों, शोधकर्त्ताओं, शैक्षणिक एवं फार्मेस्यूटिकल क्षेत्रों से विविध प्रतिभागियों को एकत्रित किया।

इस सम्मेलन में परिषद् के डॉ. मिस्बाहुद्दीन अज़हर, डॉ. जावेद इनाम सिद्दीकी और डॉ.मोहम्मद नदीम ने भाग लिया।

पंजीकरण सं. 34691/80

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *वर्ष में छः बार प्रकाशित होता है। जनवरी 2014 से यह सिर्फ अंग्रेज़ी की बजाय हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित हो रहा है। इसमें विशेषतः केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद से, जो आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है, संबंधित समाचार होते हैं। यह ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए मुफ़्त उपलब्ध है जो यूनानी चिकित्सा पद्धति के विकास में दिलचस्पी रखते हैं।* सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *में प्रकाशित सामग्री को* सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *के आभार के साथ, इस शर्त पर प्रकाशित किया जा सकता है कि वह प्रकाशन व्यापारिक उद्देश्यों से न किया जाये।*

महानिदेशक व मुख्य संपादकः
प्रो. रईस–उर–रहमान

कार्यकारी संपादकः
मोहम्मद नियाज़ अहमद

संपादकीय समितिः
खालिद एम. सिद्दीक़ी
ज़कीउद्दीन
जमाल अख्तर
क़मर उद्दीन

संपादकीय कार्यालयः
केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद
61–65, इंस्टीटयूशनल एरिया, समुख 'डी' ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

दूरभाषः +91–11/28521981, 28525982, 28525983, 28525831, 28525852, 28525862, 28525883, 28525897, 28520501, 28522524
फैक्सः +91–11/28522965
ई–मेलः unanimedicine@gmail.com
वेबसाइटः www.ccrum.res.in

मुद्रणः इंडिया ऑफसैट प्रैस, ए–1 इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1, मायापुरी नई दिल्ली–110064

ISSN 0974 1666

CCRUM newsletter

A Bi-monthly Bulletin of Central Council for Research in Unani Medicine

Volume 36 • Number 3-6 May–December 2016

India, WHO ink pact to promote AYUSH

The Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Government of India, and the World Health Organization (WHO) signed a historic project collaboration agreement (PCA) for cooperation on promoting quality, safety and effectiveness of AYUSH services on 13 May in Geneva.

The PCA was signed by the Secretary, Ministry of AYUSH Shri Ajit M. Sharan and Assistant Director General, Health Systems and Innovations, WHO Dr. Marie Kieny. Shri Shripad Yesso Naik, Hon'ble Minister of State (Independent Charge) for AYUSH and Dr. Margaret Chan, Director General, WHO witnessed the signing of the landmark agreement at the WHO headquarters.

The PCA titled as 'Cooperation on promoting the quality, safety and effectiveness of service provision in traditional and complementary medicine between WHO and AYUSH, India, 2016–2020' aims to support WHO in the development and implementation of the 'WHO Traditional and Complementary Medicine Strategy: 2014–2023' and will contribute to the global promotion of traditional Indian systems of medicine.

The PCA for the period 2016–2020 will deliver for the first time WHO benchmark document for training in Yoga, and WHO benchmarks for practice in Ayurveda, Unani and Panchakarma. These will contribute significantly to the strengthening of national capacities in ensuring the quality, safety and effectiveness of traditional medicine as well as establishing regulatory frameworks for traditional medicine products and practice and promote their integration in the national healthcare system.

Speaking at the reception hosted by India on this occasion, the AYUSH minister recalled the long history and rich heritage of traditional medicine in India and its growing relevance in providing holistic and comprehensive healthcare. He reiterated the high priority attached by the Govt. of India for the promotion of traditional medicine both in India and abroad and highlighted the numerous initiatives undertaken to functionally integrate AYUSH in India's national health programmes and for achieving Universal Health Coverage.

The minister also mentioned that the initiatives and activities undertaken by India within the country align with the WHO Traditional Medicine Strategy 2014–2023. He added that India, in fact, sets a unique example for adopting a pluralistic healthcare delivery system that allows every recognized medical system to develop and be practiced with a view to provide integrated and holistic healthcare services.

The PCA with WHO is a further recognition of India's rich experience in the development and governance of traditional medicine. It will pave the way for India's long-term collaboration with the WHO in fostering the global promotion and integration of AYUSH systems of medicine including through the inclusion of Ayurveda and Unani in the International Classification of Diseases and the International Classification of Health Interventions.

• *Niyaz*

Symposium on nutraceuticals, herbals & functional foods

The Associated Chambers of Commerce and Industry of India (ASSOCHAM) organized its 2nd National Symposium-cum-Awards on Nutraceuticals, Herbals & Functional Foods with the underlying theme of promoting holistic wellness on 5 July 2016 at New Delhi.

A view of award distribution session during 2nd National Symposium-cum-Awards on Nutraceutical, Herbals & Functional Foods organised by The Associated Chambers of Commerce and Industry of India (ASSOCHAM) on 5 July 2016 at New Delhi.

The symposium was inaugurated by Shri Y.S. Choudary, Hon'ble Union Minister of State for Science & Technology and Earth Science. During his inaugural address, he said that nutraceutical products are gaining popularity and becoming a part of the usual meals of the consumers.

In his welcome speech, Dr. B.K. Rao, Chairman, ASSOCHAM said that the nutraceuticals are the products that offer health as well as medicinal benefits, including prevention and treatment of diseases. He further informed that nutraceuticals are mainly categorised into functional foods, beverages and dietary supplements.

During the inaugural function, several dignitaries like Dr. H.K. Chopra, Co-chairman of ASSOCHAM and Chief Cardiologist, National Council of Health Care and Hospitals, Dr. Umang Chaturvedi, Vice President, ASSOCHAM and Shri Kumar Anil, Advisor, Food Safety and Standards Authority of India were present and addressed the session. On this occasion, managing directors of various industries working in the field of nutraceuticals, herbals & functional foods were awarded by the Minister of Science & Technology for their excellent work.

The symposium had three sessions on 'nutraceuticals and functional foods: aligning Indian regulatory and quality norms with the global standards', 'opportunities and challenges in Indian nutracuetical market', and 'emerging trends in nutraceuticals'. Each session had four invited lectures by eminent speakers followed by various other lectures.

On this occasion, stalls of the CCRUM and other organizations of Ministry of AYUSH, Govt. of India were also put up for exhibiting their research activities and achievements. Dr. Rampratap Meena, Research Officer (Chemistry) from Drug Standardisation Research Institute, Ghaziabad represented the CCRUM in the event.

• ***Rampratap Meena***

Project for integration of Unani Medicine in NPCDCS launched

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) under the aegis of Ministry of AYUSH, Government of India launched a pilot project for integration of Unani Medicine in National Programme for Prevention and Control of Cancer, Diabetes, Cardiovascular Diseases & Stroke (NPCDCS) at Lakhimpur Kheri, Uttar Pradesh on 1 June.

Shri Shripad Yesso Naik, Hon'ble Union Minister of State (Independent Charge) for AYUSH, Dr. Shiv Pratap Yadav, Minister of State (Medical and Health), Uttar Pradesh and Shri Ajay Mishra 'Teni', Member of Parliament inaugurating the project for Integration of Unani Medicine in NPCDCS at Lakhimpur Kheri, Uttar Pradesh on 1 June 2016.

Launching the project, Shri Shripad Yesso Naik, Hon'ble Minister of State (Independent Charge), Ministry of AYUSH, Government of India said that Unani system of medicine is a holistic system that addresses all determinants of health and disease and has potential to play a pivotal role in prevention and management of NCDs and promotion of healthy lifestyle among masses. Speaking on the objective of the project, he said that the project aims to supplement NPCDCS in preservation and promotion of health and prevention and management of lifestyle diseases in the district.

Speaking on the occasion, Dr. Shiv Pratap Yadav, Minister of State (Medical and Health), Uttar Pradesh said that according to WHO estimation, NCDs accounted for 5.9 million deaths (60% of total deaths) in the country in 2012 and therefore there is a need to use the potentials of Unani Medicine and other Indian systems of medicine to combat them.

The integration of Unani Medicine in NPCDCS, which was launched in 2010 by Directorate General of Health Services (DGHS), Ministry of Health & Family Welfare, Government of India, has been initiated to exploit potentials of Indian traditional systems of medicine and their unique and time-tested therapies engaging Ministry of AYUSH in the implementation of the programme. The CCRUM would extend its services and resources to the programme through its Central Research Institute of Unani Medicine, Lucknow at 17 Community Health Centres (CHCs), 54 Primary Health Centres (PHCs), District Hospital and NPCDCS Cell at district headquarters of Lakhimpur Kheri.

On this occasion, a training manual on "Integration of Unani Medicine in NPCDCS" was also released. A Lifestyle Clinic set up at the venue was also inaugurated by Shri Shripad Naik to mark the opening of Lifestyle Clinics at all the 17 CHCs of Lakhimpur Kheri, Uttar Pradesh.

Shri Ajay Mishra 'Teni', Member of Parliament from Kheri and Shri Utkarsh Verma Madhur, MLA, Lakhimpur, Dr. L. Swasticharan, CMO, DGHS, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM and other officers from Government of India and Government of Uttar Pradesh were present during the function.

• ***Niyaz***

Participation in workshop on *e-Granthalaya*

The CCRUM's library staff participated in a three–day workshop on *e-Granthalaya*, the integrated library management software of National Informatics Centre (NIC), during 15–17 September at New Delhi. The workshop was organized by Netaji Subhas Institute of Technology (NSIT), New Delhi in association with the NIC to provide training of the cloud-based version of the software *e-Granthalaya* 4.00.

Participants of the workshop on e-Granthalaya organized by Netaji Subhas Institute of Technology (NSIT), New Delhi during 15–17 September at New Delhi in a group photo.

The workshop was inaugurated by Prof. Yogesh Singh, Director, NSIT in the presence of Dr. S. Thakur, Head, Library Services, NSIT; Shri Prabhat Kumar Choudhary, Assistant Librarian, NSIT; Dr. R. K. Matoria, Technical Director, NIC; and Shri G. L. Meena, Registrar, NSIT.

The workshop had theoretical and practical sessions on introduction, administrative, acquisition, catalogue, circulation, serials and articles modules of the software. The sessions were conducted by Dr. Matoria and Ms. Rajni Mishra, Scientist D, NIC.

Shri Syed Shuaib Ahmad and Shri Masood-uz-Zafar Khan, both Library & Information Assistant, and Smt. Lilawati, Senior Library Attendant at Library and Information Centre of CCRUM, among others, attended the workshop. • ***Syed Shuaib Ahmad***

Participation in MTNL Perfect Health Mela 2016

The CCRUM participated in MTNL Perfect Health Mela 2016, a comprehensive health fair organized here in New Delhi during 25–29 October by Heart Care Foundation of India and New Delhi Municipal Council. The fair aimed at creating awareness about all aspects of health incorporating all pathies under one roof.

Since its inception in 1993, this mega community service event, which presents a mix of traditional and modern healthcare, has been a time-tested mass health awareness module that attracts 3-5 lakh visitors every year.

The event was inaugurated by Shri Satyender Jain, Hon'ble Health Minister, Government of NCT of Delhi.

The CCRUM along with other research councils of the Ministry of AYUSH participated in the fair and took this opportunity to propagate the strengths of their respective medicine systems and provide safe treatment to the visitors. The Council also put up a bookstall showcasing its publications and distributing free literature on health promotion and disease prevention. Dr. Waseem Ahmad, Dr. Saad Ahmed, Shri Azeem Khan and Shri Ishrat Ali managed the Council's participation in the event.

Council's Scientific Advisory Committee meets

The Council's Scientific Advisory Committee (SAC) met here in New Delhi on 28 May 2016 to discuss ongoing research activities, fresh proposals and routine activities.

A view of the 49th meeting of the Council's Scientific Advisory Committee (SAC) held in New Delhi on 28 May to discuss ongoing research activities, fresh proposals and routine activities.

The meeting began with welcome remarks by Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM who gave a brief introduction of the Council's objectives and achievements to the members of the recently reconstituted SAC. Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM made a presentation on the history of the Council and briefed the agenda items.

The SAC considered the annual action plan for the year 2016–17 and recommended the proposed projects. The committee also considered 20 protocols for clinical validation of various Unani pharmacopoeial drugs and recommended them with the suggestion that the validation of Jawarish Mastagi in Nafakh-i Shikam should be dropped and Habb-i Raal should be validated in cases of Ishal rather than Quruh-i Isna Ashari.

The SAC also considered the IMR projects received from different research centres of the Council and advised to shortlist them and place before a committee of experts for their evaluation. The committee also considered and recommended the proposal for translation of Persian book Iksir-i Azam into Urdu language through outsourcing. Other recommendations of the committee included establishment of pharmacy at Central Research Institute of Unani Medicine (CRIUM), Lucknow and Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Chennai; upgradation of pharmacy at CRIUM, Hyderabad; upgradation of pharmacology and pharmacognosy laboratories of RRIUM, Aligarh; and conversion of certain sanctioned posts from one discipline to other discipline.

The meeting was chaired by Dr. MA Waheed, Chairman, SAC and attended by its members Dr. Yasmeen Shamsi, Prof. Imamuddin, Prof. Mushtaque Ahmad, Prof. S. Shakir Jamil, Prof. Allauddin Ahmad, Dr. Ruchika Kaul Ghanekar, and Prof. Subhash Padhye, whereas Prof. Anurag Sirvastava could not make it to attend the meeting. Research Officers and concerned administrative staff of the Council were also present during the meeting.

• ***Niyaz***

CCRUM organises Hindi Pakhwara

The CCRUM organised Hindi Pakhwara at its headquarters in New Delhi and different institutes in the country with a view to motivating the employees to create an environment for implementation of the Official Language Policy in day-to-day work. The Pakhwara at the headquarters was celebrated during 8–22 September which included organization of various competitions and section-wise review of Hindi work done in different sections.

Inaugurating the Pakhwara on 08 September, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General (I/C), CCRUM said that it is the duty of every employee of the Council to use Hindi in day-to-day official work and participate enthusiastically in various competitions of Hindi Pakhwara.

During the Hindi Pakhwara, the Council organised Hindi Dictation, Hindi Translation, Hindi Note Writing, Hindi Debate, Hindi Poetry and Hindi Essay Writing Competitions at its headquarters and the winners were awarded various prizes. The Hindi Pakhwara was also celebrated in various institutes/centres under the Council which includes Central Research Institutes of Unani Medicine (CRIUMs), Hyderabad and Lucknow; Regional Research Institutes of Unani Medicine (RRIUMs), New Delhi, Aligarh, Bhadrak, Mumbai, Patna, Chennai, Kolkata and Srinagar; Hakim Ajmal Khan Institute of Literary and Historical Research in Unani Medicine, New Delhi; Drug Standardisation Research Institute (DSRI), Ghaziabad; Regional Research Centre (RRC), Allahabad; and Clinical Research Units (CRUs), Burhanpur, Meerut, etc. to promote Hindi in official work.

Officials of the CCRUM's Central Research Institute of Unani Medicine, Lucknow taking part in a competition organized during Hindi Pakhwara.

The prize distribution function at CCRUM was held on 30 September. The function had Dr. Ishwara N. Acharya, Director, Central Council for Research in Yoga and Naturopathy as the chief guest. In his address, he emphasized that sincere efforts at each level were needed for greater promotion of Hindi language.

Dr. Salim Siddiqui, Research Officer (Unani) and In-charge, Rajbhasha Section was the organiser of the event and was assisted by Hindi Assistant Smt. Akhtar Parveen and Hindi Translator Smt. Prerna Kathuria.

Training programme on DSpace

The CCRUM participated in a five–day training programme on design and development of institutional repositories using DSpace software during 1–5 August 2016 at CSIR–National Institute of Science Communication and Information Resources (CSIR-NISCAIR), New Delhi.

The training programme, which was inaugurated by the Director of NISCAIR, had various sessions for theory and hands-on practice of Linux DSpace by the faculties of the NISCAIR during the five-day programme. Shri Syed Shuaib Ahmad, Library & Information Assistant at Library and Information Centre of the CCRUM and over 25 trainees from various academic and research institutions attended the programme.

• ***Syed Shuaib Ahmad***

Ethnobotanical survey in Namakkal Forest Division

The Council's researchers from its Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Chennai conducted an ethno-botanical survey in Namakkal Forest Division of Namakkal district in Tamil Nadu during 27 January–10 February 2016. The survey aimed to explore general vegetation pattern and availability of medicinal plants in general and those used in Unani Medicine in particular. Recording of folklore claims about medicinal uses of plants was also among the objectives of the study.

Researchers from CCRUM's Regional Research Institute of Unani Medicine, Chennai interacting with the locals to record folk claims about medicinal plants.

Mallotus philippinensis (Lam.) Muell.-Arg. (Kamila)

Namakkal district is located between 11° 00′ and 11° 360′ North latitude and 77° 280′ and 78° 300′ East longitude. The Namakkal Forest Division consists of four forest ranges namely Namakkal, Rasipuram, Kollimalai and Mullukurichi. Kollimalai is a small mountain range located in the southeastern part of Namakkal district. It is a part of Eastern Ghats of South India. It covers quite narrow hill slopes and deep valleys. The average annual rainfall is about 1200mm and the temperature varies between 100 and 350 C. The vegetation of Kollimalai is predominantly dry deciduous, evergreen, shoals, and scrub jungles. The other forest ranges are mostly covered with deciduous and scrub jungles vegetation. The Kollimalai is mainly occupied by the Malayalis tribal community.

The main occupation in the district is agriculture. The cultivation generally depends on monsoon rains, wells and river water. Nearly 90 percent of the cultivated area is under food crops. The principal cereal crops of this district are paddy and different varieties of millets. Among pulses, the major crops are red gram, black gram, green gram and horse gram. Among oil seeds, groundnut, castor and sesame occupy important place under cultivation. Other important commercial crops include sugarcane, cotton and tapioca which are cultivated in many parts of Kollimali Taluk of the district. Poultry development has been rather phenomenal in the

Strychnos nux-vomica L. (Azaraqi)

district of Namakkal. Besides, the district is also known for its dairy industries.

During the field survey, the survey team collected 365 plant specimens belonging to 121 species. This includes a number of plants used in Unani system of medicine. Some of them are: *Abrus precatorius* L. (Gungchi), *Adhatoda zeylanica* Medic. (Arusa), *Aegle marmelos* (L.) Corr. (Belgiri), *Aerva lanata* (L.) Juss. Ex Schult. (Bisheributi), *Alpinia galanga* Sw. (Khulanjan), *Alstonia scholaris* (L.) R. Br. (Kashim), *Andrographis paniculata* (Burm.f.) Wall ex Nees. (Kalmegh), *Anogeissus latifolia* (DC.) Wall (Dhawa), *Boerhavia diffusa* L. (Handakaku), *Brassica nigra* (L.) Koch. (Rai), *Caesalpinia crista* L. (Karanjawa), *Cajanus cajan* (L.) Millsp. (Arhar), *Cardiospermum canescens* Wall. (Qilqil), *Cassia fistula* L. (Amaltas), *Cassia auriculata* L. (Tarwar), *Chenopodium album* L. (Bathua), *Clerodendrum serratum* (L.) Moon (Bharangi), *Clitoria ternatea* L. (Mazaryoon), *Coriandrum sativum* L. (Kishneez), *Datura metal* L. (Datura), *Dodonaea viscose* (L.) Jacq. (Jangli Anar), *Gossypium arboreum* L. (Pambadana), *Gymnema sylvestyre* (Retz.) R.Br. (Gurmar Buti), *Hemidesmus indicus* (L.) R. Br. (Ushba-e-Hindi), *Hibicus rosa-sinensis* L. (Gurhal), *Ipomoea nil* (L.) Roth (Habb-ul-neel), *Leucas aspera* (Willd.) Link. (Thumbi), *Mallotus philippinensis* (Lam.) Muell.-Arg. (Kamila), *Mentha arvensis* L. (Naa Naa), *Mirabilis jalapa* L. (Gul-e-Abbas), *Moringa oleifera* Lam. (Sahajana), *Morous alba* L. (Toot safaid), *Mucuna pruriens* (L.) DC. (Konch), *Myristica fragrans* Houtt. (Bisbasa), *Nerium indicum* Mill. (Kaner), *Ocimum americanum* L. (Badrooj), *Ocimum basilicum* L. (Badrooj), *Phyllanthus emblica* L. (Aamla), etc.

The surveyors also collected 36 folklore claims on medicinal uses of plants from the tribal and local people of the study area. Some of the important folk uses of plants are: Leaves of *Abrus precatorious* L. (Kundumani) for cough and cold; Fruits of *Aegle marmelos* (L.) Corr. (Vilvam) for asthma; Whole plant of *Aerva lanata* (L.) A. Juss. Ex Schult. (Poolai poo) for kidney stone; Leaf of *Alpinia galanga* Sw. (Sitharathai) for stomach pain; Bark of *Alstonia scholaris* (L.) R.Br. (Eazhilaipalai) for fever; Leaf of *Andrographis paniculata* (Burm.f.) Wall. ex Nees. (Nilavembu) for malarial fever; Leaf of *Brassica nigra* (L.) Koch. (Kadugu)

Morous alba L. (Toot safaid)

for boils; Leaf of *Cajanus cajan* (L.) Millsp. (Thuvarai) for jaundice; Flower buds of *Calotropis gigantea* (L.) R.Br. , (Erakku) for poisonous bites; Leaf of *Cardiospermum halicacabum* L. (Mudakathan) for joint pain; Flowers of *Cassia auriculata* L. (Avaram) for diabetes and bone fracture; Flowers of *Cassia fistula* L. (Kondrai) for throat infection; Leaf of *Catharanthus roseus* (L.) G. Don. (Nithiyakalyani) for gastric troubles; Leaf of *Cleome viscosa* L. (Naivellai) for joint pain; Seeds of *Clitoria ternatea* L. (Sangupoo) for gastric ulcers and root for fever; Tubers of *Dioscorea bulbifera* L. (Kattuvalli) for swelling and pain; Leaf of *Dodonaea viscosa* (L.) Jacq. (Virali) for headache; Leaf of *Gymnema sylvestre* (Retz.) R.Br. ex Schult. (Sirukurinji) for diabetes; Root of *Hemidesmus indicus* (L.) R.Br. (Nannari) for diarrhoea; Flowers of *Hibiscus rosa-sinensis* L. (Semparuthi) for hair growth; Latex of *Jatropha curcas* L. (Kattukottai/ Kattuamanaku) for mouth ulcers; Leaf of *Lantana camara* L. (Oonichedi) for wound healing; Leaf of *Leucas aspera* (Willd.) Link (Thumbai) for cold; Seeds of *Mallotus philippensis* (Lam.) Muell.-Arg. (Senthuram) for scabies; Leaf of *Mentha arvensis* L. (Pudina) for indigestion; Leaf of *Mirabilis jalapa* L. (Anthimalli) for wound healing; and seeds of *Mucuna pruriens* (L.) DC. (Poonaikkali) for sexual weakness.

The survey team was headed by Shri R. Murugeswaran, Research Officer (Botany) and consisted of Hakim Noman Anwar, Research Officer (Unani); Dr. K. Venkatesan, Research Assistant (Botany); Shri Mazhar Ali, Field Attendant and Shri Mohammed Hussain, Driver of the Institute.

• ***Aminuddin with inputs from R. Murugeswaran***

BRICS Trade Fair-2016

The CCRUM participated in BRICS Trade Fair – 2016 organised by the Ministry of Commerce and Industry and Ministry of External Affairs, Government of India during 12–14 October 2016 at Pragati Maidan, New Delhi. Themed on Building BRICS - Innovation for Collaboration, the fair focused on showcasing some of the best technologies available across BRICS nations to address their development challenges.

A view of the visitors at the CCRUM's stall in BRICS Trade Fair – 2016 organised by the Ministry of Commerce and Industry and Ministry of External Affairs, Government of India during 12–14 October 2016 at Pragati Maidan, New Delhi.

The fair that was inaugurated by Shri Hamid Ansari, Hon'ble Vice President of India in the presence of various ministers from the participating nations also aimed to highlight several other sectors of interest to the BRICS and tried to bring together young entrepreneurs.

The CCRUM and other research councils and institutes of the Ministry of AYUSH, Govt. of India participated in the fair and showcased their achievements in research and educational activities. The CCRUM's stall attracted about 1000 visitors and provided them with free literature on the principles of healthy living and achievements of the Council in the area of research in Unani Medicine. Dr. Saad Ahmed, Consultant (Arogya), Dr. Sajid, Technical Officer (Unani), and Shri Azeem Khan, Messenger represented the CCRUM in the fair.

Participation in LASA conference – 2016

The CCRUM participated in the International Conference on Advances in Laboratory Animal Science for Modelling Human Diseases organised by Laboratory Animal Scientists' Association (LASA) India in collaboration with Biocon Bristol-Myers Squibb Research & Development Center (BBRC) at Bangalore during 14–15 October 2016.

Dignitaries lightening the ceremonial lamp at the inaugural function of International Conference on Advances in Laboratory Animal Science for Modelling Human Diseases organised by Laboratory Animal Scientists' Association (LASA) India at Bangalore during 14–15 October.

The conference focused on the issues impeding the outcomes of animal research, creating irreproducibility in ongoing research and increasing translatability related to animal research.

The focus of the conference was on the past, present and future role of animal studies in science and health care and it made an effort to capture the developments and stimulate a lively discussion on the current trends in lab animal science revolving around animal welfare and science and also the recent animal models used in different areas of research especially in cancer, kidney diseases and neuropharmacology. The conference brought together a diversified bunch of participants from pharmaceuticals, academics, researchers and industries engaged in animal research.

Dr. Misbahuddin Azhar, Dr. Mohd Ghulam Husain, Dr. Javed Inam Siddiqui and Dr. Mohd Nadeem of the Council participated in the conference.

Registration No. 34691/80

About CCRUM Newsletter

The CCRUM Newsletter *is published six times a year. Since January 2014 it is published bilingually in Hindi and English instead of being published in English only. It contains news chiefly about the work of Central Council for Research in Unani Medicine – an autonomous organization of Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Government of India. It is free of charge to individuals as well as organizations interested in the development of Unani Medicine. Material published in the* CCRUM Newsletter *may be reproduced provided credit is given to the* CCRUM Newsletter *and provided such reproduction is not used for commercial purposes.*

Director General & Editor-in-Chief:
Prof. Rais-ur-Rahman

Executive Editor:
Mohammad Niyaz Ahmad

Editorial Board:
Khalid M. Siddiqui
Zakiuddin
Jamal Akhter
Qamar Uddin

Editorial Office:
CENTRAL COUNCIL FOR
RESEARCH IN UNANI MEDICINE
61-65, Institutional Area, Opp. 'D' Block,
Janakpuri, New Delhi - 110 058 (India)

Telephone : +91-11/28521981, 28525982, 28525983, 28525831, 28525852, 28525862, 28525883, 28525897, 28520501, 28522524
Fax : +91-11/28522965
E-mail: unanimedicine@gmail.com
Website: www.ccrum.res.in

Printed at: India Offset Press, A-1, Industrial Area, Phase-I, Maya Puri, New Delhi - 110064